विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:२२/११/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: अष्टम: पाठनाम विचित्र साक्षी

पाठ्यांश:

न्यायाधीश: आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान् ।

दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिन: ।

नीतिं युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते ।।

शब्दार्था:

दुष्कराणि – कठिन , कर्माणि - कामों को , नीतिम् - नीति को

युक्तिम् – युक्ति को , समालम्ब्य - सहारा लेकर , लीलया - खेल-खेल में

प्रकुर्वते – कर लेते हैं

अर्थ

न्यायाधीश ने सिपाही को जेल के दंड का आदेश दे कर उस

व्यक्ति को सम्मान के साथ छोड़ दिया ।

बुद्धि की संपत्ति से युक्त लोग नीति और युक्ति का सहारा लेकर

कठिन कामों को भी खेल खेल में ही (आसानी)से कर लेते हैं।